Date:
P. No:

पाठ-3 तृतीय:पाठ: सुभाषितानि

प्र.1 प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए →

(क) कार्याणि केन सिध्यन्ति?
उत्तर उद्यमेन

(ख) क्रोधं कथं जयेत्?
उत्तर अक्रोधम्

(ग) दानेन किं जयेत्।
उत्तर कदर्यं

(घ) प्रियवाक्यप्रदानेन के तुष्यन्ति।
उत्तर सर्वे मानवा:

(ङ) केन विना दैवम् न सिध्यति।
उत्तर पुरुष कारेण विना

प्र.2 संधि- विच्छेद कीजिए -

(क) तस्मादेव → तस्मात् + एव
(ख) क्रोधनसाधुम् → क्रोधम् + असाधुम्
(ग) च्चानृतम् → च्च + अमृतम्
(घ) एकेनापि → एकेन + अपि
(ङ) भूतिमिच्छता → भूतिम + इच्छता।

प्र.3 रिक्त-स्थान
उत्तर (क) कार्याणि न मनोरथै:।
(ख) असाधुं
(ग) दैवं न सिध्यति
(घ) प्रियवाक्यप्रदानेन
(ङ) पुरुषेणेह

Scanned with CamScanner

Date:
P. No:

प्र.4 विलोम शब्द लिखिए ->
(क) क्रोधम् -> अक्रोधम्
(ख) दानम् -> कदर्यम्
(ग) सत्यम् -> असत्यम्
(घ) मानवः -> दानवः

प्र.5 सूक्तियों की व्याख्या कीजिए ->

(क) उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
व्याख्या-> सभी कार्य परिश्रम से ही पूरे होते है न की इच्छाओं और कल्पनाओं से। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम से कार्य पूरे करने चाहिए।

(ख) पुरुषकारेण विना दैवम् न सिध्यति।

व्याख्या-> परिश्रम के बिना भाग्य साथ नही देता। जो व्यक्ति कठिन परिश्रम करता वही ~~भाग्य~~ भाग्यशाली होता है।

प्र.6 श्लोको का भावार्थ हिन्दी में लिखिए -

(क) प्रियवाक्यप्रदानेन ---- दरिद्रता।
भावार्थ-> प्रियवचन बोलने से सभी लोग प्रसन्न होते है। इसलिए प्रियवचन ही बोलने चाहिए, बोलने में क्या दरिद्रता करना।

(ख) षड्दोषाः ------ दीर्घसूत्रता।
भावार्थ-> इस संसार में कल्याण चाहने वाले व्यक्ति को छः दोषों को त्याग देना चाहिए। अधिक सोना, थकान, भय, क्रोध आलस्य और धीरे-धीरे काम करने की आदत।